पर्यावरणीय बाल गीत

पौधा और मैं

अनुराधा जोशी

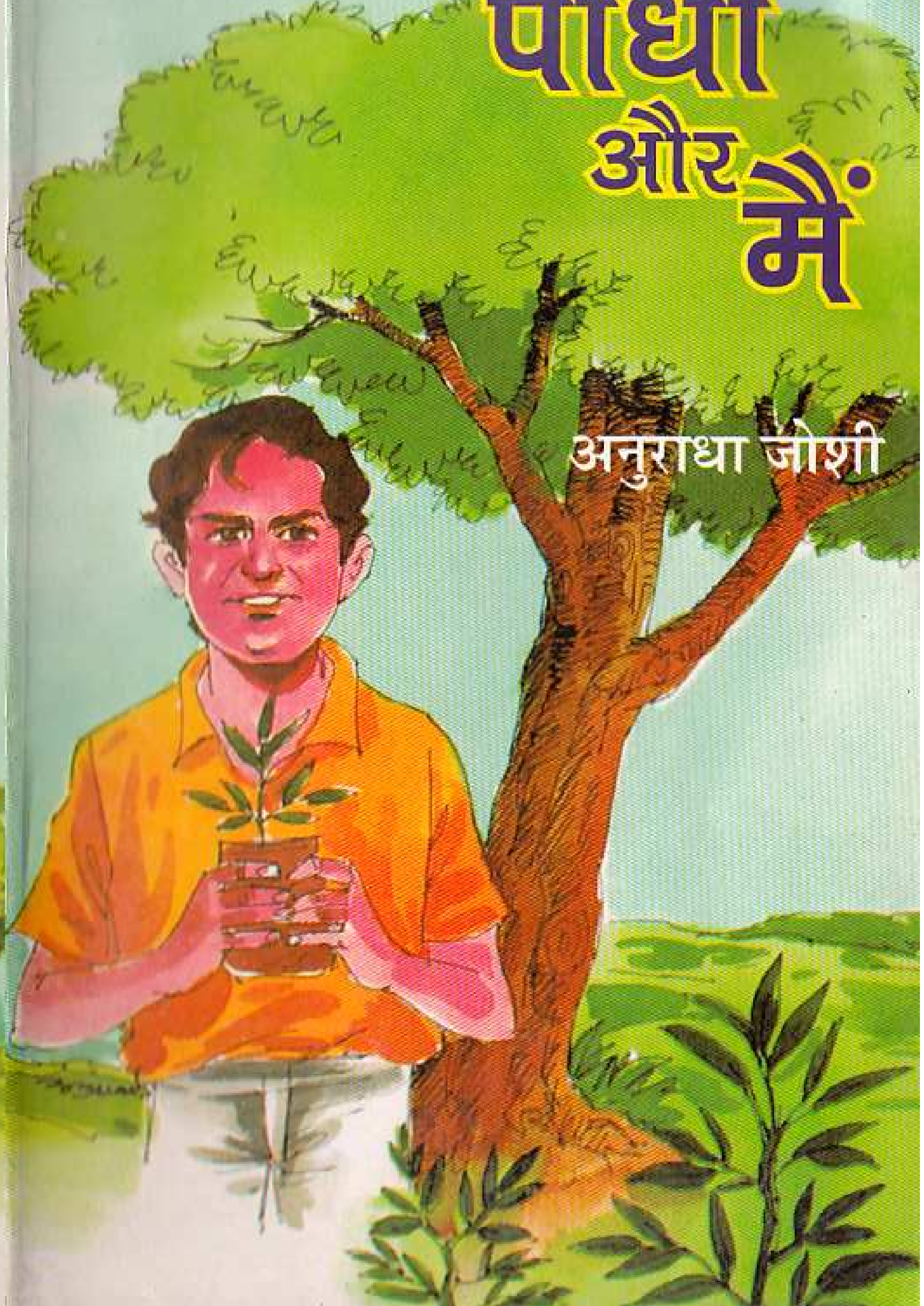

पौधा और मैं

(पर्यावरणीय बाल गीत)

लेखक

अनुराधा जोशी

वाणी प्रकाशन
नयी दिल्ली-110002
फोन : 23273167, 23275710, फैक्स : 23275710
e-mail : vani_prakashn@yahoo.com
vani_prakashan@mantraonline.com

ISBN : 81-88716-10-3

वाणी प्रकाशन
21—ए, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
© सिद्ध मसूरी
आवरण : अतुलवर्द्धन
प्रथम संस्करण : 2003
मूल्य : 35 रु.
शब्द संयोजन : शुभ-दीप लेजर प्रिंटर्स,
दिल्ली- 110032

Paudha Aur Mein
By Anuradha Joshi

अनुक्रम

1.	पौधा और मैं	5
2.	छोटी-छोटी बातें	6
3.	अगर	8
4.	पेड़ की शिकायत	9
5.	बच्चों की पुकार	11
6.	गांव के वासी	13
7.	कहाँ गई?	14
8.	पेड़ों का ज्ञान	16
9.	नहीं कटेंगे पेड़ यहाँ के	18
10.	सावधान हो सावधान!	20
11.	प्रकृति और पुरुष	22
12.	बारिश का गीत	23
13.	तितली का गाना	24

भूमिका

छोटी उम्र में पड़े संस्कार ही चरित्र का निर्माण करते हैं। इस समय बच्चों में अद्‌भुत ग्रहण शक्ति होती है जिसके कारण वे बड़ी सहजता से सिखाये गये मूल्यों को ग्रहण कर पाते हैं। आज के युग में पर्यावरण संबंधी चिंताएं विश्वव्यापी हैं इसलिए छोटे बच्चों में पर्यावरण के प्रति सही संस्कार गढ़ना बहुत महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

बाल गीतों का यह छोटा संग्रह इसी दिशा में एक प्रयास है। इसका दूसरा संस्करण निकालते हुए हमें अत्यंत हर्ष हो रहा है। प्रथम संस्करण में विशेष संशोधनों के लिये हम श्रीकांत जोशी जी के आभारी हैं।

बाल शिक्षकों से विशेष अनुरोध है कि वे ऐसे बाल गीत अवश्य सुनाएँ जो बच्चों के जीवन व प्रकृति के यथार्थों से जुड़ हो। शिक्षक साधारण से साधारण विषय को आधार बनाकर गीत स्वयं रच सकते हैं। इस प्रकार बच्चों की जानकारी बढ़ेगी। कहानियों को संवाद, आवाज के उतार चढ़ाव व चेहरे के भावों से रोचक बनाएँ।

पर्यावरण के किसी एक विषय बिन्दु से, महीने भर का पाठ्यक्रम आसानी से बनाया जा सकता है। उस विषय बिन्दु के बारे में कुछ प्रश्न पूछे जा सकते हैं, जैसे- क्या, कौन, कैसे, कहां, किसलिए आदि। इन प्रश्नों के आधार पर पाठ्यक्रम या परियोजना बन सकती हैं। उदाहरण के लिए यदि "पानी" को एक माह का विषय चुनते हैं तो उक्त सवाल पूछे जा सकते हैं जैसे- पानी क्या है? पानी कहां से आता है? पानी किसके लिए जरूरी है? साफ पानी क्या है? गंदा पानी क्या है? पानी में क्या डूबता है, क्या तैरता है? (खेल-क्रिया) पानी के पास ले जाना, पानी से चलती पनचक्की दिखाना। (भ्रमण)

गीतों के माध्यम से पर्यावरण खेल क्रियाएं अथवा परियोजना की रचना करते रहने से बाल शिक्षकों को शिक्षण सामग्री का कभी भी अभाव न रहेगा और रचनात्मक पाठ्यक्रम का निमार्ण वे स्वयं कर सकेंगे।

—सिद्ध

पौधा और मैं

ये छोटा नन्हा सा पौधा,
बिल्कुल मेरे जैसा है।
कितना कोमल कितना छोटा,
कितना सुन्दर लगता है।
मैं भी छोटा, ये भी छोटा,
अपना सा ही लगता है। ये छोटा...

खाना खाता मेरी तरह,
पानी पीता मेरी तरह,
जब मैं दाल रोटी खाऊँ,
ये खाये मिट्टी उपजाऊ।
खाना पीना छोड़ दें हम तो
ये मुरझाये मैं मुरझाऊँ। ये छोटा...

हम दोनों ही खा पीकर जब,
खूब बड़े हो जाएँगे।
मैं आदमी और ये पेड़
दोस्त-दोस्त कहलाएँगे।
एक दूसरे की रक्षा कर,
दोनों साथ निभाएँगे। ये छोटा...

छोटी-छोटी बातें

छोटे-छोटे नियमों को जब,
हम जीवन में ले आते।
कर पाएँगे काम बड़ा तब,
ध्यान रहें जब छोटी बातें।
पहले अपने आप को देखें,
दाँत साफ, नाखून हों छोटे।
धुला हो मुख और धुली हों आँखें
कंघी से हों बाल समेटे।

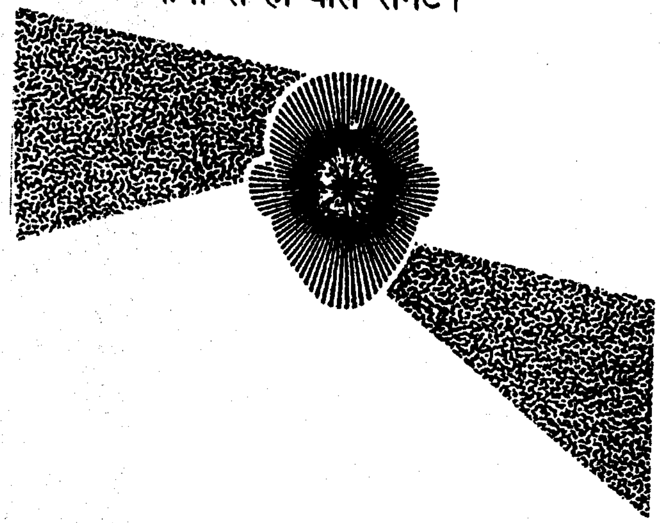

फिर हम अपने घर को देखें,
झाड़-बुहार लें अन्दर-बाहर।
साफ हों कपड़े, जल और मटके,
साफ रसोई, साफ स्नानघर।
अन्त में अपने गाँव को देखें,
ठहरा न हो गन्दा पानी,
साफ हों गाँव के सारे रास्ते,
ग्राम सफाई ऐसी लानी।
छोटे-छोटे नियमों को जब,
हम जीवन में ले आते।
कर पाएँगे काम बड़ा तब,
ध्यान रहें जब छोटी बातें।

अगर

अगर न होती शीतल वायु,
हममें प्राण डालता कौन?
अगर न होता सूरज नभ में,
हमको शक्ति देता कौन?
अगर न होती मिट्टी, खेतों में
हरियाली लाता कौन?
अगर न होते नदियाँ झरने,
जग की प्यास बुझाता कौन?
इन चारों को छोड़ भला हमें,
जीवन देने वाला कौन?
याद करें प्रकृति माता को,
उसको छोड़ हमारा कौन?

पेड़ की शिकायत

मुझे जानते हुए भी तूने,
मेरा सही रूप न जाना।
मुझे शिकायत है तुझसे कि,
मेरा मूल्य नहीं पहचाना।
मैंने ही तो युगों-युगों से,
इस सुन्दर धरती को पकड़ा।
कितनी मजबूती से मेरी,

जड़ ने हर पहाड़ को जकड़ा।
धरती और पवन से जल ले,
मैंने अपने अन्दर खींचा।
जिसे सुखा न पाया सूरज,
वही तो बादल बन कर बरसा।

मुझे बचा ले अभी नहीं तो,
सूखेगा तेरा जग सारा।
मुझे काट देगा तो तेरी,
कट जाएगी जीवन धारा।

बच्चों की पुकार

पर्वत में रहने वाले,
हम छोटे-छोटे बच्चे हैं।
पर्वत की रक्षा करनी है,
क्योंकि मन के सच्चे हैं।

बह जाती उपजाऊ मिट्टी,
ढह जाती चट्टानें हैं।
छोड़ चले जाते हैं वासी,
इन पर रोक लगानी है।

पेड़ लगाकर रुक जाएँगी,
गिरती चट्टानें और घर।
मिट्टी जब उपजाऊ होगी,
लौटेंगे सब अपने घर।

पर्वत में रहने वाले,
हम छोटे-छोटे बच्चे हैं।
करना हमको काम बड़ा है,
क्योंकि मन के सच्चे हैं।

गाँव के वासी

गाँवों में रहने वाले,
ये बात समझ नहीं पाते हैं।
क्यों गाँव छोड़कर जाते लोग?
शहरों में रहकर खाते हैं?

क्यों उखड़ा-उजड़ा-सा दिखता,
अपना ही यह गाँव का वेश?
क्यों गन्दे रस्ते, गन्दे घर हैं?
बीमारी, जड़ता और क्लेश?

क्या हम अपने ही हाथों से,
बदल नहीं सकते यह रूप?
चलो, आज ही झाड़-बुहार लें,
अंधियारे में लाएँ धूप।

छोटा-सा है गाँव हमारा,
यहाँ सुधार तो लाना है।
हम नहीं तो कौन करेगा?
आखिर गाँव हमारा है।

कहाँ गई?

कहाँ गईं वे बहती नदियाँ,
कहाँ गये वे उपवन?
कहाँ गये वे बहते झरने,
नन्दन वन वृन्दावन?

काट दिए मूर्ख हाथों ने,
पेड़ों जैसे रक्षक।
छीन लिया अपने बच्चों से,
उजले जीवन का हक।

आज शपथ ले लें हम सब,
कि मिलकर पेड़ लगाएँ।

छोटे पौधे सींच-सींच कर,
ऊँचे वृक्ष बनाएँ।
धरती मां को घने वनों का,
सुन्दर कवच पहनाएँ।

टूट न पाए अब ये धरती,
मिलकर उसे बचाएँ।
हम ही लौटा देंगे अपने,
हरे भरे से उपवन।

देखेंगे हम फिर से अपने,
नन्दनवन वृन्दावन।

पेड़ों का ज्ञान

युगों-युगों से पाठ सिखाता,
वृक्ष खड़ा है मौन।
ज्ञान दिया उसने बिन बोले,
पर सुनने वाला कौन?

जड़ों ने उसकी मज़बूती से,
मिट्टी को है पकड़ा।
स्वयं दिखाई भी न देती,
जिन पर पूरा पेड़ खड़ा।

उसके मोटे तने को देखो,
सीधा अडिग खड़ा है।
वर्षा आँधी तूफ़ानों से,
कभी न वह डरा है।

शाखाओं ने चारों तरफ
अपने हाथ बढ़ाए।
पत्ते अपनी कोमलता से,
हरियाली बरसाएँ।

हम भी अपने जीवन को,
पकड़ें मज़बूत जड़ों से।
और तने की दृढ़ता लेकर,
डटे रहें लगन से।

शाखाओं से फैलें हम,
मैत्री का हाथ बढ़ाएँ।
पत्तों की छाया सा बन
सबको ठण्डक पहुँचाएँ

पेड़ों से सीखें यदि हम भी
उनके पाठ निराले।
बन जाएँगे उन जैसे ही,
दृढ़ संकल्पों वाले।

नहीं कटेंगे पेड़ यहाँ के

सब : “पर्वत के सब बच्चों ने मिल,
एक आवाज उठानी है।
नहीं कटेंगे पेड़ यहाँ के,
हम बच्चों ने ठानी है।”

एक : “पेड़ कटे तो ढह जाएँगे,
ऊँचे पर्वत और शिखर।
ढह जाएँगे साथ-साथ में,
उपजाऊ मिट्टी और घर।”

सब : “पर्वत के सब...............

एक : “सूखेंगे सब झरने पानी,
टूटेंगी ऊँची चट्टान।
फैलेगा तब उसकी जगह,
दूर-दूर तक रेगिस्तान।”

सब : “पर्वत के सब............

एक : “सँभलो अब भी, वक्त नहीं है,
सामने कितना खतरा है।
पर्वत के रहने वालो,
ये काम हमें ही करना है।”

सब : “आने वाले कल पर तुमसे,
अधिक अधिकार हमारा है।
नहीं कटेंगे पेड़ यहाँ के,
हम बच्चों का नारा है।
पर्वत के सब बच्चों ने मिल,
एक आवाज उठानी है।
नहीं कटेंगे पेड़ यहाँ के
हम बच्चों ने ठानी है।”

सावधान हो सावधान!

प्लास्टिक थैली से हों,
सावधान भाई सावधान।

दिखने की यह छोटी सी,
रंग-बिरंगी भोली सी,
इसकी असलियत पहचान।
सावधान हो सावधान।।
प्लास्टिक थैली से हों,
सावधान भाई सावधान।

पानी को बहने ना दें,
पौधों को उगने ना दें
छिपे हुए दुश्मन को जान।
प्लास्टिक थैली से हों,
सावधान हो सावधान,
सावधान भाई सावधान।।

जलने से ज़हर उगले,
दबने से भी नहीं गले,
मिला इसे ऐसा वरदान।
सावधान हो सावधान।।
प्लास्टिक थैली से हों,
सावधान भाई सावधान।

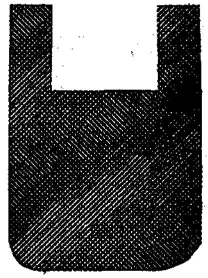

दुश्मन को अब जाना है,
घर से इसे भगाना है,
बढ़ते खतरे को पहचान।
सावधान हो सावधान।।
प्लास्टिक थैली से हों,
सावधान भाई सावधान।।

प्रकृति और पुरुष

मिले प्रकृति से उपहार,
सूरज, धरती और बयार।

करें यदि हम इनसे प्यार,
सुखी रहेगा सब संसार।

धरती को हम सूझ बूझ से,
उपजाऊ जब बनाएँगे।

पेड़ों का श्रृंगार सजा,
हम पूरा लाभ उठाएँगे।

सूरज, जल और वायु से जब,
अपने काम कराएँगे।

प्रकृति और पुरुष का प्रेम,
तब ठीक समय हम पाएँगे।

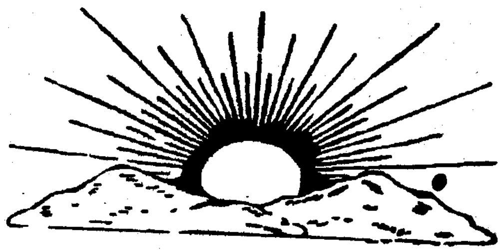

बारिश का गीत

काले बादल घिर-घिर आए,
रिमझिम-रिमझिम जल बरसाए।
काले बादल............।

पानी तप बादल बन जाए।
हवा उसे ऊपर ले जाए।

बादल फट कर जल बरसाए,
काले बादल घिर-घिर आए।
काले....................।

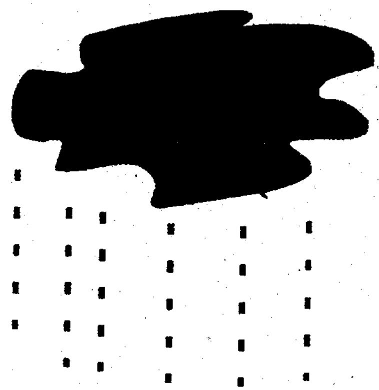

तितली का गाना

तितली रानी बड़ी सयानी।
कितनी उसकी अजब कहानी।

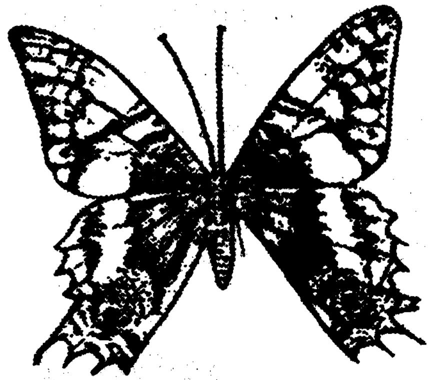

अण्डे से कीड़ा बनकर वह,
मोटी सी एक इल्ली बन वह,
सो गई सूखा पत्ता बन वह,
निकल आई अब तितली बन वह।
तितली रानी बड़ी सयानी।
है ना उसकी अजब कहानी?